“भारत में मृत जन्म दर में गिरावट के बावजूद वैश्विक स्तर पर मृत जन्मों में सबसे अधिक योगदानकर्ता देश बना हुआ है” । मातृ स्वास्थ्य सेवा में प्रणालीगत कमियों का विश्लेषण करें जो इस प्रवृत्ति में योगदान करते हैं और उन्हें संबोधित करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप का सुझाव दें।

भारत में मृत जन्मों की उच्च दर, घटती प्रवृत्ति के बावजूद, मातृ स्वास्थ्य सेवा में महत्वपूर्ण प्रणालीगत कमियों को उजागर करती है। यहाँ कुछ प्रमुख कमियाँ और सुझाए गए नीतिगत हस्तक्षेप दिए गए हैं:

प्रणालीगत कमियाँ:

1. गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व देखभाल तक पहुँच: कई महिलाएँ, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व देखभाल तक पहुँच की कमी रखती हैं, जिससे अनदेखे जटिलताएँ होती हैं।

2. कुशल प्रसव परिचारिकाएँ: प्रसव के दौरान कुशल प्रसव परिचारिकाओं की कमी से मृत जन्मों का जोखिम बढ़ जाता है।

3. स्वास्थ्य सेवा का बुनियादी ढाँचा: अपर्याप्त स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढाँचा, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में, समय पर चिकित्सा हस्तक्षेप में बाधा डालता है।

4. डेटा संग्रह और ट्रैकिंग: खराब डेटा संग्रह और ट्रैकिंग तंत्र मृत जन्मों के मूल कारणों की पहचान करना और उनका समाधान करना मुश्किल बनाते हैं।

5. सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ: आर्थिक असमानताएँ स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को प्रभावित करती हैं, जिसमें गरीब महिलाएँ अधिक असुरक्षित होती हैं।

6. सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाएँ: सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक कलंक महिलाओं को समय पर चिकित्सा सहायता लेने से रोक सकते हैं।

नीतिगत हस्तक्षेप:

1. प्रसवपूर्व देखभाल को मजबूत करना: मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिकों और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व देखभाल तक पहुँच बढ़ाना2.

2. कुशल प्रसव परिचारिकाओं को प्रशिक्षित करना: प्रशिक्षित प्रसव परिचारिकाओं की संख्या बढ़ाएँ और प्रसव के दौरान उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करें3.

3. स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढाँचे में सुधार: समय पर चिकित्सा देखभाल प्रदान करने के लिए, विशेष रूप से कम सेवा वाले क्षेत्रों में, स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढाँचे में निवेश करें।

4. उन्नत डेटा संग्रह: प्रभावी रूप से मृत जन्मों की निगरानी और समाधान करने के लिए मजबूत डेटा संग्रह और ट्रैकिंग सिस्टम लागू करें।

5. सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को संबोधित करना: ऐसी नीतियाँ विकसित करें जो सभी महिलाओं के लिए उनकी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच सुनिश्चित करें।

6. सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम: महिलाओं को प्रसवपूर्व देखभाल और चिकित्सा सहायता प्राप्त करने के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करें4.

7. सांस्कृतिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण: स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होने और महिलाओं को देखभाल प्राप्त करने से रोकने वाली सामाजिक बाधाओं को दूर करने के लिए प्रशिक्षित करें।

इन प्रणालीगत अंतरालों को दूर करके तथा व्यापक नीतिगत हस्तक्षेपों को लागू करके, भारत अपनी मृत जन्म दर को और कम कर सकता है तथा मातृ स्वास्थ्य देखभाल परिणामों में सुधार कर सकता है।